Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

ॐ

17-1-2011
सोमवार
4.00 Am.

गुलाब की सुगन्ध का रहस्य

सभी पुण्य आत्माओ को मेरा नमस्कार — — —

गहनध्यान अनुष्ठान के प्रथम दिवस से ही एक बड़ा बदलाव महसुस हो रहा है। इस बार प्रथम दिवस से ही अनुभव हो रहा है। की सभी साधको का चित्त" व्यकती के उपर से शकती" की ओर चला गया है।" स्थुल से सुक्ष्म" की ओर चला गया है। और यह साधको की आध्यात्मीक प्रगती का द्योतक लक्षण है।

यह इस कारण हुआ की उन्हे अब निश्चीत हो गया की अब हम 45 दिनो तक स्वामीजी को देख नही सकते है, बोल नही सकते है। कोई पत्र भी भेज नही सकते है। तो अनायास ही उनका सभी का चित्त एक बड़ी सामुहिकता के साथ" स्थुल से सुक्ष्मशरीर" की ओर चला गया और परिणाम भी सकारात्मक है। जिनका ध्यान नही लगता था उनका भी लगना प्रांरभ हो गया कहते है। न" जितना संग उतना रंग" सदैव गहनध्यान का अनुभव होता है। जो लोग सालभर ध्यान नियमीत नही करते वे भी इन 45 दिनो मे नियमीत ध्यान करते है।

PTO

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

और इसी कारण साधको की सामुहिक शकती बढ जाती है। इस साल अनुभव हो रहा है, गत वर्षो की तुलना मे साधको की संख्या अचानक कई गुना बढ गयी है। यह "समर्पण ध्यान" मे आया नया बदलाव है। इस 45 दिनो की "चैतन्य की गंगा" मे प्रत्येक साधक डुबकी लगाये यही प्रभु से प्रार्थना है। इस त्यारवो शुध्ध पवीत्र आत्माओ की सामुहिकता मे विश्व के कोने कोने से अलग2 रंग के अलग2 भाषा के अलग2 धर्म के अलग2 जाती के लोग शामील है। कुछ लोग तो ऐसे भी शामील हो गये है, जिनके "भाषा" की जानकारी भी हमे नही है, और न उनके "देश" की जानकारी हमे है। "समर्पण ध्यान" उन तक कैसे पहुचा यह भी एक रहस्य ही है।

समुचे विश्व को चलाने वाली "वैश्विक चेतना शकती" एक ही है। उसे सुना नही जा सकता है। उसे देखा नही जा सकता है। वह बोल नही सकती है। इस लिये उससे जुडने के लिये हमारा शरीर काफी नही है। क्योकी शरीर के ये अंग उस तक पहुचने के पर्याप्त नही है। क्योकी उस परमात्मा की की शकती को केवल और केवल महसुस

PTO.

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

किया जा सकता है। क्योंकी जिसे हम सुनते है। वह उसका माध्यम है। जिसे देखते है। वह भी उसका माध्यम ही है। क्योंकी माध्यम "स्थुल" होता है। और परमात्मा "सुक्ष्म" होता है। वह दिखता नही है। महसुस होता है। यह ठीक वैसा ही है। जैसे "गुलाब का फुल" दिखता है। और गुलाब के फुल की सुगन्ध महसुस होती है। अभी सभी साधको की स्थिती भी वैसी है। गुलाब का फुल दिखता नही है। लेकीन आज विश्व के कोने कोने मे उस "गुलाब की सुगन्ध" महसुस की जा रही है। और जब फुल दिख नही रहा है, और गुलाब की सुगन्ध आ रही है। तो अनायास ही साधको की आंखे बंन्द हो जाती है। और चित गुलाब की सुगन्ध पर चला जाता है। और ध्यान कब लग गया। इसका पता भी नही चल रहा है। और ध्यान अनायास ही लग रहा है।

सुगन्ध पर चित होने से "गुलाब की सुगन्ध" दिन प्रतिदिन बढ रही है। और उस गुलाब की सुगन्ध मे सारी सुधबुध समाप्त हो रही है, बस ऐसा लगता है। की उस सुगन्ध का आंनद जिवन भर ही ले।

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

ऐसा इस लिये लग रहा है। क्योंकी यह सुगन्ध लगती है। गुलाब की लेकीन गुलाब की सुगन्ध भी "माध्यम" है। वास्तव मे यह सुगन्ध "परमात्मा की अनुभुती" की ही है। परमात्मा की अनुभुती साधको को इन दिनो "गुलाब की सुगन्ध" के रूप मे अनुभव हो रही है। इसी कारण सुबह ध्यान मे महसुस हो रही "गुलाब की सुगन्ध" दिनभर साधको के आसपास रहती ही है। और इसी कारण साधक जहाँ भी जाते है, साथ मे यह सुगन्ध को लेकर जा रहे है, और उस पवित्र-सुगन्ध का प्रभाव उनके आसपास के वातावरण पर आसपास के लोगो पर भी सकारात्मक रूप मे पड रहा है, और सभी साधको के आसपास एक गुलाब की सुगन्ध का कवच ही मानो निर्माण हो गया है, और इस प्रकार का अनुभव- "गहनध्यान अनुष्ठान" मे प्रथम बार इतनी बडी सामुहिकता- मे अनुभव हो रहा है।

PTO.

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

यह सब इस लीये इस बार हो रहा है, क्योंकी प्रथम बार एक बहुत बडी लाखो साधको की सामुहीकता का चित्त "स्थुल शरीर से सुक्ष्मशरीर" पर चला गया और उसी सामुहीकता के कारण ही यह अनुभुती सभी साधको को हो रही है। स्थुल "शरीर की सिमा" है, और सुक्ष्म की तो "कोई सिमा" ही नही है, इसी लीये यह अनुभुती विश्व मे एक साथ ही महसुस हो रही है, प्रत्येक साधक समझ रहा है, की उसे ही महसुस हो रही है, लेकीन ऐसा नही है, यह अनुभुती सामुहीकता मे सभी साधको को ही हो रही है, क्योंकी सुक्ष्म शरीर के साथ प्रत्येक साधक जुडा हुआ है और यह जुडाव शरीर से नही "आत्मा का आत्मीयता" से है, और यह गुलाब की सुगन्ध उसी बात की "अनुभुती" है,

यह गुलाब के सुगंन्ध रूपी अनुभुती आप को जिवन भर होती रहे।है, यही प्रभु से प्रार्थना है, आप का जिवन भी सदा गुलाब जैसा प्रसन्नरहेव दुसरो को भी प्रसन्नता प्रदान करे यही सभी को आशिर्वाद है,

आपका-

बाबा स्वामी

17/11/2011